International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 18-02-2019; Accepted: 20-03-2019
www.socialsciencejournal.in
Volume 5; Issue 3; May 2019; Page No. 78-81

भारतीय सामाजिक जीवन में यात्रा एवं संख्या सम्बन्धी लोक विश्वास

आशीष कुमार सिंह
संग्रहालय छात्रराष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान नई दिल्ली, भारत।

प्रस्तावना

भारतीय समाजिक जीवन में यात्रा सम्बन्धी लोक विश्वास का प्रचुर प्रचार पाया जाता है। ग्रामीण जनजीवन में इसका अटूट विश्वास है। सच तो यह है कि यात्रा सम्बन्धी मान्यता उनके जीवन का अविच्छिन्न अंग हो गयी है। यदि अपने घर से उसे दो चार मील (6किलोमीटर) भी दूर जाना हुआ तो उसके लिए भी शुभ मुहूर्त ढूढ़ते हैं। चाहे कोई आवश्यक कार्य वर्षो न हो कार्य में कितनी भी क्षिप्रता की अनिवार्यता क्यों न हो, ग्रामीण जन बिना अद्रा–भ्रदा का विचार किये हुए, बिना शुभ–मुहूर्त देखे हुए घर के आगे चार डग (पैर) भी नहीं रख सकता। उसकी इसी अक्षिप्रकारिता के कारण जनता में यह लोकोक्ति प्रसिद्ध है–

''घरी से घर छूटे, नव घरी भ्रदा''

अर्थात् एक क्षण में घर छूटना चाहता है, नष्ट होने वाला है, परन्तु घर छोड़कर भागने वालों के लिए अभी नौ घड़ी (तीन घंटा) तक भ्रदा है अर्थात् प्रस्थान करने का शुभ मुहूर्त नहीं है। कहने का तात्पर्य केवल इतना ही है कि गांव का व्यक्ति बिना शुभ मुहूर्त के यात्रा नहीं करता। चाहे किसी भी कार्य के लिए जाना हो, वह कार्य भले ही नष्ट हो जाय।

यात्रा सम्बन्धी निम्नलिखित विषयों पर निश्चित रूप से विचार किया जाता है –

1. दिन विचार
2. तिथि विचार
3. ग्रह विचार
4. योगिनी विचार
5. काल विचार
6. दिशा विचार

दिन तथा दिशा विचार

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार विशिष्ट दिशा में यात्रा करना श्रेयस्कर बतलाया गया है। अतः कल्याण चाहने वाले व्यक्ति को इन्ही दिनों ही यात्रा करनी चाहिए। यात्रा के लिए शुभ दिन और शुभ दिशाओं की तालिका नीचे दी जा रही है।

	शुभ दिन	शुभ दिशा
1.	रविवार	पूर्व उत्तर, दक्षिण
2.	सोमवार	पश्चिम, उत्तर, दक्षिण
3.	मंगलवार	पूर्व, पश्चिम, दक्षिण
4.	बुधवार	पूर्व, पश्चिम, दक्षिण
5.	बृहस्पतिवार	पूर्व, पश्चिम, उत्तर।
6.	शुक्रवार	पूर्व, उत्तर, दक्षिण
7.	शनिवार	पश्चिम, उत्तर, दक्षिण।

इस सम्बन्ध में भड्डरी की वह लोकोक्ति प्रसिद्ध है, जिसके अनुसार सोम और शनिवार को पूर्व दिशा में नहीं जाना चाहिए। मंगल और बुधवार को उत्तर दिशा में नहीं जाना चाहिए, जो बृहस्पति को दक्षिण दिशा में जाता है वह बिना अपराध के ही जूता खाता है। बुधवार को यात्रा करना अत्यन्त निशिद्ध है, क्योंकि इस दिन जाने से कौड़ी से भी भेंट नहीं होती, अर्थात् अर्थ की प्राप्ति बिल्कुल नहीं हो सकती।[2]

दिशाशूल

ज्योतिशास्त्र में कुछ विशिष्ट दिनों को विशेष दिशाओं में जाना निषिद्ध तथा वर्जित है। इसे 'दिक् शूल' कहा जाता है। जायसी ने विभिन्न दिनों को अमुख दिशाओं में जाना अशुभ बतलाया गया है। उनके अनुसार सोम तथा शनिवार को पूर्व दिशा में नहीं जाना चाहिए। मंगल तथा बुध को उत्तर दिशा में जाना अशुभ है। रविवार तथा शुक्रवार को पश्चिम दिशा में प्रस्थान करना अनुचित है। इस प्रकार जायसी तथा उसके अशुभ फल की तालिका निम्नलिखित है।[3]

दिन	दिशाशूल	फल
रविवार	पश्चिम दिशा	राहु का निवास
सोमवार	पूर्व दिशा	निषिद्ध
मंगलवार	उत्तर दिशा	मृत्यु की प्राप्ति
बुधवार	उत्तर दिशा	मृत्यु की प्राप्ति
बृहस्पतिवार	दक्षिण दिशा	अग्निदाह
शुक्रवार	पश्चिम दिशा	राहु का निवास
शनिवार	पूर्व दिशा	निषिद्ध

दिशाशूल का परिहार

'दिशाशूल' का शाब्दिक अर्थ है दिशा का कंटक या विघ्न। अतएव उपर्युक्त दिनों में दिशाशूल होने के कारण यात्रा करना अत्यन्त निषिद्ध है। परन्तु यदि किसी मनुष्य को दिशाशूल के दिन यात्रा करना अत्यन्त आवश्यक हो तो उसके देशों के परिहार करने का भी उपाय बताया गया है। ''मुहूर्त–चिन्तामणि'' नामक ज्योतिष के ग्रन्थ में इस विषय का उल्लेख पाया जाता है। इसके अनुसार रविवार को सिखरन (श्रीखण्ड), सोमवार को पायस (खीर), मंगलवार को काँजी, बुधवार को उबाला हुआ दूध, बृहस्पतिवार को दही, शुक्रवार को कच्चा दूध, शनिवार को प्रस्थान करते समय तिल और और भात खाना चाहिए। ऐसा करने से उस दिन विशेष का यात्रा का दोष (दिशाशूल) मिट जाता है। अतः जिस दिन यात्रा का करना अभीष्ट हो, उसी दिन उस दोष को नष्ट करने वाले भोजन को ग्रहण करके जाना उचित है। 'मुहूर्त चिन्तामणि' के लेखक ने परिहार के विषयों को ''दोहद'' की संज्ञा से स्मरण किया गया है।[4]

इसी प्रकार विभिन्न दिशाओं को यात्रा में ''दिशाशूल'' के परिहार के लिए उन्होंने निम्नलिखित परिहार बतलाया गया है। यदि पूर्व दिशा में यात्रा करनी हो तो (घृत) घी, पश्चिम में यात्रा करनी हो तो तिल और भात, उत्तर में मछली और दक्षिण में दूध खाकर जाने से दोष नहीं लगता।

महाकवि जायसी ने भी ''दिशाशूल'' के परिहार का वर्णन अपने महाकाव्य में किया हैं। उनके अनुसार रविवार को पान खाना, सोमवार को दर्पण में मुँह देखना, मंगल धनिया खाना, बुध को दही खाना, बृहस्पतिवार को गुड़ और शुक्रवार को राई, शनिवार

को वायविडँग मुँह में रखकर कूचने से 'दिशाशूल'' में यात्रा करने का समस्त दोष नष्ट हो जाता है।[5]
'शीघ्रबोध' नामक ज्योतिष ग्रन्थ में भी इसी प्रकार के 'दोष परिहार' का उल्लेख पाया जाता है।

प्रस्थान रखना

भारतीय सामाजिक जीवन दिशा शूल परिहार के अनेक उपाये बताये गये है। दूसरे प्रकार के उपाय को 'प्रस्थान रखना' कहा जाता है। प्रस्थान का शाब्दिक अर्थ ''यात्रा'' से है। यदि किसी दिन ''दिशाशूल हो, परन्तु किसी आवश्यक कार्यवश यात्रा करना अनिवार्य हो तो यात्रा की पूर्व रात्रि को कोई वस्त्र, जनेऊ अथवा पुस्तक या अन्य कोई सामग्री किसी व्यक्ति के घर रख दी जाती है। इस विधि को ''प्रस्थान रखना'' कहते है। ऐसा माना जाता है कि ऐसा करने से यात्रा के दोष का परिहार हो जाता है। सामाजिक जीवन में लोगों को विश्वास है कि जिस दिशा में प्रस्थान रखा हो अथवा जिस व्यक्ति के पास रखा हो, उसके पास प्रस्थान कर्ता को नहीं जाना चाहिए। यात्रा के पहले प्रस्थान के लिय कौन सी वस्तु रखनी चाहिए इस विषय में चिंतामणि का कथन है कि ब्राह्मण यज्ञोपवीत, क्षत्रिय को भाल, वैश्य को शहद (मधु) और शुद्र को आंवला रखना चाहिए अथवा जिस व्यक्ति को जो वस्तु परमप्रिय हो, उसी को प्रस्थान के रूप में रखना चाहिए।[6]

नक्षत्र विकार

भारतीय सामाजिक जीवन में यात्रा करते समय नक्षत्रों का भी विचार किया जाता है। प्रायः यह भी विचार किया जाता है कि किस नक्षत्र में यात्रा शुभ अथवा अशुभ है। इस विषय पर ज्योतिष विषय में बहुत विचार किया गया है। 'मुहूर्त चिन्तामणि' के अनुसार ज्येष्ठ नक्षत्र में पूर्व दिशा में, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में दक्षिण दिशा में, रोहिणी नक्षत्र में पश्चिम दिशा तथा उत्तरी फाल्गुनी नक्षत्र में उत्तर दिशा में यात्रा कदापि नहीं करनी चाहिए।[7]

तिथि विचार

किन तिथियों में यात्रा करना शुभ अथवा अशुभ है इस सम्बन्ध में बड़ा विचार किया जाता है। जायसी के अनुसार परिवा (प्रतिपदा) और नवमी तिथि को पूर्व दिशा में यात्रा नहीं करनी चाहिए। द्वितीया और दशमी को उत्तर की ओर जाना अशुभ है। पंचमी और त्रयोदशी को दक्षिण दिशा में लक्ष्मी का निवास होता है। अतः इस तिथि को यात्रा शुभ है। षष्ठी और चतुर्दश को पश्चिम दिशा में यात्रा सिद्धिदायनी होती है।
''मुहूर्त चिंतामणि'' के अनुसार यात्रा के लिए षष्ठी, अष्ठमी तथा द्वादशी तिथियाँ प्रशरत नहीं है। इसके अतिरिक्त शुक्लपक्ष को प्रतिपदा, पूर्णिमा, अमावस्या तथा रिक्त तिथियां भी यात्रा के लिए शुभ नहीं मानी जाती हैं। भारतीय सामाजिक जीवन में ग्रामांचलों में आज भी परिवार और अमावस्या आदि की तिथियां यात्रा के लिए शुभ नही मानी गयी है। लोग इन तिथियों को यात्रा करने से हिचकते हैं।

यात्रा के अन्य प्रतिबन्धक

पिता घातिक –

जिस दिन किसी व्यक्ति के पिता की मृत्यु होती है, वह दिन उसके लिए अत्याधिक अशुभ माना जाता है। ऐसे दिन को ग्रामीण भाषा में पिता घातिक कहा जाता है। तो पितृघातक शब्द को अपभ्रंश रूप है। इस पिता घातिक के दिन यात्रा करना अत्यन्त निषिद्ध माना जाता है, क्योंकि इस दिन यात्रा करने से अमंगल होने की आशंका बनी रहती है।

कुलमानि –

जिस दिन किसी कुल में कोई दुर्घटना हो जाती है, कुल का कोई वृद्ध (विशिष्ट) मृत्यु को प्राप्त हो जाता है, वह दिन उस कुल के समस्त प्राणियों के लिए अशुभ माना जाता है। ऐसे दिन को ''कुलमानि'' कहते हैं। अर्थात् कुल के लिए अशुभ एवं अमंगलकारी होता है। इसलिए इस दिन कोई व्यक्ति यात्रा नहीं करना चाहता है।
परन्तु कुलमानि यात्रा के लिए उतना बड़ा प्रतिबंधक नहीं है, जितना कि पिताघातिक। आवश्यकता पड़ने पर कुलमानि के दिन कोई यात्रा भले करें परन्तु ''पिताघातिक'' के दिन तो कदापि नहीं करता।

ग्रह विचार

यात्रा करते समय ग्रह विचार किया जाता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा सम्पादित 'पद्मावत में यात्रा के समय दायें चन्द्रमा शुभ कारक माना गया है। यात्रा के समय चन्द्रमा का दायां होने से यात्रा सुखकारी होती है। परन्तु यदि चन्द्रमा बायें हो तो मानव की यात्रा में दुख और आपत्ति आती है।[11] साधारणतया यात्रा के अवसर पर चन्द्रमा का विचार तो किया ही जाता है, परन्तु विवाह के अवसर पर नवविवाहिता कन्या के ससुराल जाने के समय चन्द्रमा की स्थिति का विचार अत्यन्त आवश्यक माना जाता है। इस समय यदि चन्द्रमा सामने तथा दाहिने हो यात्रा सुखदायक और मंगलकारी मानी जाती है। ज्योतिष के ग्रन्थों में लिखा है कि यदि चन्द्रमा सम्मुख हो तो धन की प्राप्ति होती है। दायें हो तो सुख की प्राप्ति होती है, पृष्ठ भाग में हो तो मृत्यु और बायीं ओर होने पर धन का नाशा होता है।[12]

काल विचार

यात्रा में काल का विशेष विचार नहीं किया जाता। इसलिए जायसी ने इसका विशेष वर्णन न करके केवल संकेत किया है। काल के विषय में कहा गया है कि 'सन्मुखे नेष्टम' अर्थात् जिस दिन, जिस दिशा में, काल रहे उस दिन उस दिशा में यात्रा नहीं करनी चाहिए।
रविवार को उत्तर दिशा में, सोमवार वायव्य दिशा में मंगल को पश्चिम दिशा में, बुधवार नैऋत्य कोण में, वृहस्पति को दक्षिण में, बुधवार आग्नेय कोण में और शनिवार को पूर्व दिशा में काल का निवास होता है। अतः उक्त दिनों उस दिशा की यात्रा करना निषिद्ध है।

समय विचार

यात्रा में किस दिशा में किस समय पर यात्रा करनी चाहिए। इसके विषय में भी अनेक मान्यताएं प्रचलित है। भड्डरी का कथन है कि पूर्व दिशा में यात्रा करनी हो तो गोधूनि (सन्ध्या के समय, पश्चिम दिशा में जाना हो तो प्रातः काल, उत्तर दिशा में दोपहर तथा यदि दक्षिण दिशा में जाना अभिप्रेत हो तो रात में प्रस्थान करना चाहिए। ऐसी दशा में उस समय भ्रदा तथा दिशा शूल भी हो वह नष्ट हो जाता है, अर्थात् उसका पूरा बुरा प्रभाव कुछ भी नहीं पड़ने पाता।[14]

यात्रा सम्बन्धी शुभ शकुन

यात्रा के संबंध में तिथि, दिशा, काल नक्षत्र आदि पर विचार करने के उपरान्त अब ऐसे शकुनो का विचार किया जाता है तो योग के समय शुभ माने जाते है। इन शकुनों का सम्बन्ध पशुओं और पक्षिओं और पक्षियों के दर्शन उनकी गतिविधि तथा चेष्टाओं से विशेष रूप से संबंधित है।

1. मछली का दर्शन

यात्रा के अवसर मछली का दर्शन अत्यन्त शुभ माना जाता है।, इसका प्रधान कारण यह है कि भगवान मत्स्यावतार के रूप में प्रथम अवतार लिया था। अतः इसकी गणना शुभ पदार्थो में की जाती है। जायसी ने 'रतनसेन यात्राखण्ड' में राजा की यात्रा के

अवसर पर मछली का दर्शन कल्याणकारी माना जाता है। परन्तु यदि मछली चांदी के कण्डाल में भरी हो तो उसकी कल्याण कारिता का क्या कहना।

2. मृग का दाहिने ओर मुँह कर जाना–

भारतीय साहित्य में मृग अपनी सुन्दरता के लिए विख्यात है। इसकी मनोरम आंखे, तरूण युवतियों के नेत्रों के लिए उपमा का कार्य करती है। राजा रतनसेन की यात्रा के समय जायसी ने मृग का दाहिनी ओर रहना शुभ सूचक माना है।[15] संस्कृत साहित्य में मृगो का दाहिनी ओर जाना शुभ है। परन्तु इसके ठीक विपरीत मृगों का बायी ओर जाना तथा विपरीत दिशा में चलना अशुभ माना जाता है। भरत के अयोध्या लौटते समय मार्ग में मृगों के प्रतिकूल चलने का अमंगल सूचक के रूप में उल्लेख होता है।''[16]

3. कौवे का बायीं ओर बोलना

कौवे के विषय में अनेक लोक विश्वास प्रचलित है। परन्तु इसका सम्बन्ध यहां केवल यात्रा विषयक शकुन से ही है। जायसी ने कौवे का बायीं ओर बोलने का उल्लेख किया है। जो अत्यन्त मंगलकारी माना गया है। गोस्वामी तुलसीदास न हरे–भरे खेत में कौवे का दाहिनी ओर बैठना शुभ लिखा है।[17]

4. क्षेमकारी का बायी ओर दिखायी पड़ना–

क्षेमकारी आकाश में उड़ने वाली चील को कहते हैं। जायसी ने इसका आकाश में धोबिन के रूप में उल्लेख किया है।[20] गोस्वामी जी ने इसे मंगल करने वाला पक्षी लिखा है। इसी प्रकार यात्रा के अवसर कुररी अर्थात् टिटिहरी पक्षी का बायी ओर बोलना शुभ माना गया है।''बसन्तराज शकुन में इसका बायीं ओर बोलना अत्यन्त प्रशस्त कहा गया है।[21]

गदहा अत्यन्त घृणित तथा निन्दनीय पशु माना जाता है, क्योंकि वह रूप और स्वर दोनों में वीभत्स दिखायी पड़ता है। परन्तु जायसी ने इसका बायीं ओर आवाज शुभ लिखा है।[22] मुहूर्त चिन्तामणि नामक ग्रंथ में भी इस धारण की पुष्टि होती है।[23] बायीं ओर इसका बोलना शुभ है वहाँ बायी ओर इसका रेंकना अशुभ माना जाता है। यात्रा के समय लोमड़ी का बायी ओर जाना मंगल की सूचना देता है।

इसी प्रकार यात्रा के समय बिल्ली का रास्ता काट देना अशुभ माना जाता है। अनके व्यक्ति ऐसी घटनाएं हो जाने पर घर लौट जाते हैं और फिर कुछ विलम्ब के साथ यात्रा करते हैं। जहां इस अवसर पर दूध पीना अत्यन्त अशुभ है, वहां दही का खाना मंगलकारी है । यदि खाने के लिए दही नहीं मिली तो उसका टीका लगा देना ही पर्याप्त समझा जाता है।

यात्रा का मूलमंत्र

उत्साह–यात्रा के संबंध में इतने शुभ अशुभ शकुनों के विचार के पश्चात यह स्पष्ट एवं निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि समस्त यात्राओं का एक ही मूल मंत्र है और वह महामंत्र है। – ''मन में उत्साह का होना।'' यदि आपके मन में यात्रा के प्रति उत्साह नहीं है यदि देश या विदेश में जाकर निर्दिष्ट कार्य करने का उमंग नहीं है तो न तो वह यात्रा ही करनी चाहिए और न उस कार्य के सम्पादन में ही संलग्न होना चाहिए। आचार्य अंगिरा का मत है कि जब मन में यात्रा के लिए उत्साह हो, उमंग हो, उछाह हो, उछाह हो तभी उसे करना चाहिए।[24]

यात्रा के सम्बन्ध में शुभ और अशुभ शकुन अनंत है जिनका उल्लेख करना अत्यन्त कठिन है। संस्कृत में ''मुर्हूत चिन्तामणि'' यात्रा के सम्बन्ध में विशद एवं प्रमाणित ग्रंथ है।

लोक जीवन में मानव का जीवन भी तो एक सुदीर्घ यात्रा ही है। यदि ग्रामीण एवं शिक्षित व्यक्ति यात्रा के सम्बन्ध में अधिक विश्वास करते है तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं समझना चाहिए।

संख्या सम्बन्ध लोक विश्वास

संख्याओं के बारे में भारतीय समाज में अधिक लोक विश्वास प्रचलित है। इस संख्याओं में भी कुछ शुभ और अशुभ मानी जाती है। इस संख्याओं को दो वर्गो में विभाजित किया जा सकता है।

1. सम तथा 2. विषम।

विषम संख्याएँ–1,3,5,7,9 आदि मानी जाती है। सम संख्याएँ दो, चार, छ, आठ, दस आदि संख्याएँ दो से विभाजित हो जाती है। सामान्यत संख्या तीन को छोड़कर संख्या शुभ मानी जाती है। अतएव विवाह के बाद गणना विषम वर्षो के बीतने पर ही किया जाता है।

परन्तु सम संख्याओं की स्थिति इनसे भिन्न है। सम्पूर्ण देश संख्या सम्बन्धी लोक विश्वास का साम्राज्य व्याप्त दृष्टिगोचर होता है।

संदर्भ

1. पण्डित रामनरेश त्रिपाठी– ''ग्राम साहित्य''पृ0–189
   सोम, शनीचर, पुरूष न चालू। मंगल, बुध, उत्तर दिसि कालू।।
   जे वियफै को दक्खिन जाय। बिना गुनाहे। पनही खाय।।
2. वहीं– ''बुध कहै मैं बड़ा सयाना, मोरे दिन करो पयाना।
   कौड़ी से नहं भेट कराऊं।। पृ0 189
3. ''अदिति, सुक, पछिम दिसि राहू, विपफै दक्षिन, लंक दिसि डाहू।
   सोम, सनीचर, पूरब न चालू, मंगर, बुध, उत्तर दिशि कालू।।''
   जायसी–पद्मावत 382/1–2
4. ''रसालां, पायसं कांची, श्रृतं, दुग्धं तथा दधि।
   पपोऽश्रृतं तिलन्नां च, भक्षयेत्वार–दोहदम।।''
   रामाचार्य–'मुहूर्त चिन्तामणि', यात्रा प्रकरणम्। पृ0 157
5. वही– पृष्ठ–157
6. जायसी–पद्मावत्, 382/3–7
7. कार्याद्यैरिह गमनस्य चेत विलम्बो,
   भू–देवादिभि रूपवीतकायुद्युश्च।
   क्षौद्रश्चामलफलमासु चाल नीचं,
   सर्वेशां भवित यदेव हत्प्रियं वा।''
   रामाचार्य–मुहूर्त चिन्तामणि', (यात्रा प्रकरण), पृ0 '158
8. मुहूर्त चिन्तामणि, (यात्रा प्रकरण), पृ0 130
9. ''परीवा, नवमी, पुरूब न भाएँ। दूइज, दशमी, उत्तर ऊदाएँ
   पांचई, तेरसि, दखिन रमेसरी। ढ़िछ, चौदसि, पच्छिऊँ प्रमेसरी।।
   जायसी–पद्मा– रतनसेन विदाई खण्ड, पृ0 –168
10. ''न शश्ठी न चद्वादशी, नाश्टमी, नोसिताद्याः तिथिः पूर्णिताद्मा न रिक्ता।'' वही पृ0 130
11. 'दहिन यन्द्रमा सुख सरवदा, बाएँ चन्द्र त दुः आपदा।''
    आचार्य रामचन्द्र शुक्ल–'पद्मावत', पृ0–169
12. ''सन्मुखे अर्थ लाभाय, दक्षिणे सुख सम्पदाः।''
    पृष्ठतों मरणं चैव, वामेचन्द्रे धनक्षय ''मुहूर्त चिन्तामणि' यात्रा प्रकरणम्, पृ0 159
13. वही पृ0 141
14. ''पुरूब गोधूनि, पच्छिम प्रात।
    उत्तर दुपहर, दक्खिन रात।। ''पं0 रामनरेश त्रिपाठी– ग्राम साहित्य, पृ0 189।
15. दाक्षिने गिरिग आई गा धाई।'' पद्मावत 235/4
16. मृग माला फिरि दाहिन आई।
    मंगल गान जनु दीन्ह दिखाई।।''
    रामचरितमानस, 'बालकाण्ड' दोहा–302
17. भट्टि 'रावणवध', सर्ग–3/26
18. प्रतीहार बोला खर बाई। पद्मावत – 135/4
19. ''दाहिन काग सुखेत सुहावा'' गो0 तुलसीदास

रामचरितमानस (बालकाण्ड), दोहा 302
20. ''बाये अकासी धोबिन आई ।'' पद्मावत् – 135/6
21. ''क्षेमकारी कह क्षेम विसेखी'' गो0तुलसी रामचरितमानस (बालकाण्ड), दोहा 302
(अ) वसन्तराज शकुन, 8/13
22. पद् मावत– 135/4
23. ''धन्याः' बामें स्वर –खन''–मुहूर्त चिन्तामणि, (यात्रा प्रकरण), श्लोक–105
24. ''ऑगिरा मनसि उत्साहः, विपवाक्यं जनार्दनः।